झड़पे होती है। कभी-कभी तो नौबत मारपीट तक पहुँच जाती है। कितने ही बिल और विधेयक अधर में लटके रह जाते हैं किन्तु जहाँ सांसदों के वेतन-भत्ते बढ़ाने की बात आती है दोनों पक्ष एक स्वर में उसका समर्थन करते हैं। इस मुद्दे पर एकमत हो जाते हैं। जहाँ स्वार्थ की यह मनोवृत्ति होती है, वहाँ सामाजिकता खंडित होती है। सामाजिकता में तो यह देखना पड़ता है कि मेरे पास इतना है, इतना मिल रहा है तो सामने वाले के पास कहीं इससे कम तो नहीं है? कहीं वह अभाव की जिन्दगी तो नहीं जी रहा है? अगर ऐसा सोचते हैं तो यह सामाजिकता की भावना से पूर्ण सोच होगी। सबल नेतृत्व का तीसरा गुण है- समर्पण। मुझे याद है राष्ट्रपति बनने के बाद जब एपीजे अब्दुल कलाम प्रथम बार आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शनार्थ अहमदाबाद आये थे, तब आचार्यश्री ने राष्ट्रपति को कहा- राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले राष्ट्र को नम्बर एक पर रखें और पार्टी को नम्बर दो पर। यह सटीक कथन था। जहाँ राष्ट्र गौण हो जाता है और पार्टी प्रमुख बन जाती है वहाँ जनता के दिलों पर छाप छोड़ना सम्भव नहीं है। जो व्यक्ति किसी संगठन और पार्टी का नेतृत्व करता है तो वहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ को गौण करना जरूरी हो जाता है। अगर कोई व्यक्ति स्वयं को शक्तिशाली मानते हुए पार्टी छोड़ने या पार्टी को झुकने के लिए मजबूर करता है तो इसका अर्थ है वह संगठन या उस पार्टी के लिए खतरा बन गया है। जो अपने संगठन के लिए विश्वस्त नहीं बन पाया वह अन्य लोगों के लिए कैसे योग्य हो सकता है। चौथा गुण है- सबको साथ लेकर चलना और पाँचवा है योग्य साथियों में कार्य विभाजन करना। अगर देश का वर्तमान नेतृत्व वर्ग सबको साथ लेकर चलता और योग्य व्यक्तियों में कार्य विभाजन करता तो जो अशोभनीय स्थितियां बन रही है, वह नहीं बनती और आलोचनाओं का शिकार नहीं होना पड़ता। ऐसी स्थिति में सबल नेतृत्व पैदा कैसे हो इस पर विचार करना आवश्यक है या यह कहूँ सबल नेतृत्व के हाथों में सत्ता आए इस पर ध्यान देना जरूरी है। देश की जनता अगर बिना भयभीत हुए और बिना प्रलोभन में फँसे अपने अधिकारों का प्रयोग करें तो सबल नेतृत्व के गुणों से दूर रहने वाला व्यक्ति संसद भवन में पहुँच ही नहीं सकता

नोट :- लेखक तेरापंथ धर्मसंघ के जन सम्पर्क प्रभारी है।